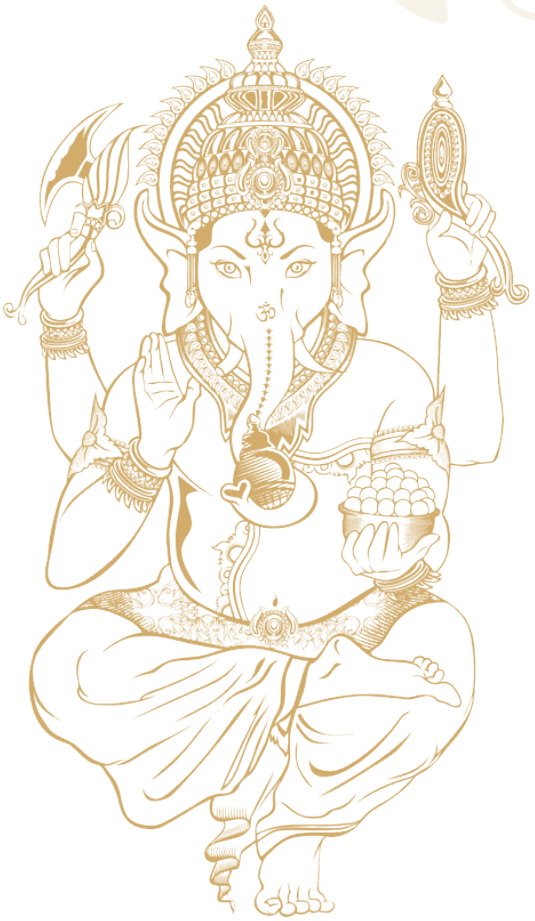

15 Feb 2026

07:06 PM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121302801

तिथि 15/02/2026 **समय** 19:06:00 **वार** रविवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:27
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	04:43:31 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:14:08 घं	योनि	नकुल
सूर्योदय	06:41:44 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	17:56:21 घं	वर्ण	वैश्य
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	जलचर
शक संवत	1947	वर्ग	सिंह
मास	फाल्गुन	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	भूमि
तिथि	14	जन्म नामाक्षर	जी-जीवन
नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
योग	व्यतिपात	होरा	गुरु
करण	विष्टि	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी
सूर्य 0वर्ष 2मा 21दि
सूर्य
15/02/2026
09/05/2026
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
15/02/2026
शुक्र 09/05/2026 सिद्धा

योगिनी
संकटा 0वर्ष 3मा 18दि
संकटा
15/02/2026
05/06/2026
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
15/02/2026
05/06/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			18:45:41	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	---	0:00			
सूर्य			02:38:28	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	केतु	शत्रु राशि	1.57	कलत्र	पितृ	विपत
चंद्र			09:29:50	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	सम राशि	1.50	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	23:55:50	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	मंगल	उच्च राशि	1.14	आत्मा	भ्रातृ	विपत
बुध			19:50:27	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	सम राशि	1.10	भ्रातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु	व		21:45:48	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.29	अमात्य	धन	प्रत्यारि
शुक्र			12:11:45	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मित्र राशि	1.04	मातृ	कलत्र	क्षेम
शनि			05:56:50	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.34	ज्ञाति	आयु	साधक
राहु	व		14:45:08	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		14:45:08	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

चन्द्र कुंडली

नवमांश कुंडली

सर्वाष्टकवर्ग

दशमांश कुंडली

FUTUREPOINT Astro Solutions
एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोनः- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

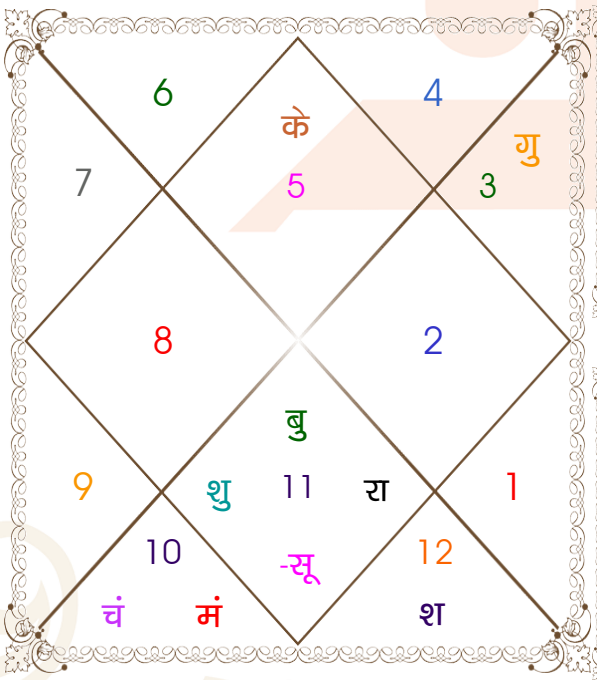

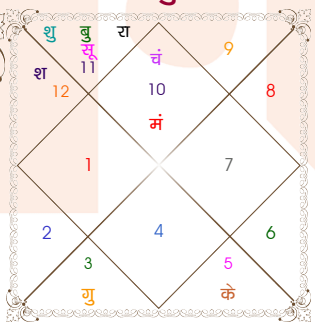

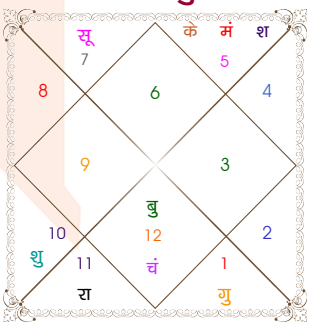

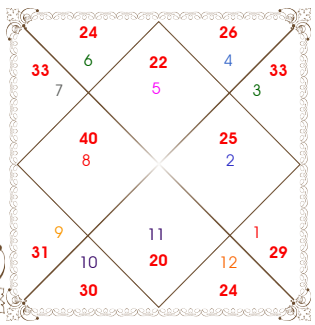

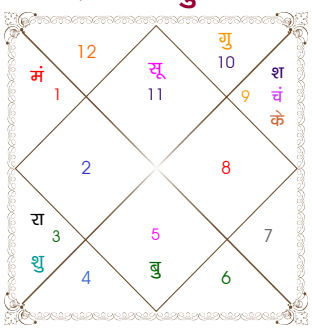

नक्षत्रफल

आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, गण मनुष्य , नाड़ी अन्त्य, योनि नकुल तथा वर्ग सिंह होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "जी" या "जि" अक्षर से होगा यथा- जितेन्द्र, जीवनाथ।

आप समाज में एक गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथा योग्य सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप सात्विक गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा तामसिकता का प्रायः अभाव रहेगा। विषम परिस्थितियों में भी आप शान्त चित्त से समस्याओं का सामना करेंगे तथा बिना किसी चिन्ता या घबराहट के उनका समाधान करेंगे। आप को जीवन में सर्वप्रकार के सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा आनन्दपूर्वक आप इनका उपभोग कर सकेंगे। धनादि से आप युक्त रहेंगे तथा इसका अभाव की आपको अनुभूति नहीं होगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आप स्वपरिश्रम से ज्ञानार्जन करके उसमें विद्वता प्राप्त करेंगे। साथ ही कई कार्यों को करने में भी आप दक्ष रहेंगे। अतः आप लोगों के मध्य प्रसिद्ध तथा आदरणीय होंगे।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आप के स्वभाव में हमेशा विनम्रता का भाव रहेगा एवं अन्य जनों से आप अत्यन्त विनयपूर्वक व्यवहार करेंगे जिससे वे सब आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। धर्म के प्रति आपकी निष्ठा रहेंगी तथा समस्त धार्मिक क्रियाओं के अनुपालन में आप तत्पर रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या भी अधिक मात्रा में रहेगी तथा सभी मित्रों से आपको पूर्ण सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होगा। आप एक कृतज्ञ पुरूष होंगे तथा अन्य व्यक्तियों के द्वारा उपकृत होने पर पूर्ण रूप से उनका उपकार स्वीकार करके उनके प्रति आभार प्रकट करेंगे। साथ ही समाज के सभी वर्गो में आप लोकप्रिय रहेंगे।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आपका शारीरिक कद लम्बा होगा तथा शरीर भी स्थूलता से युक्त रहेगा। आप में साहस तथा वीरता का गुण विद्यमान रहेगा एवं अपने अधिकाँश कार्यों को साहस से ही सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त कलह तथा विवाद आदि में आप शत्रुपक्ष को पराजित करने में भी

सामान्यतः सफलता अर्जित करेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आप में स्वभाव से ही दानशीलता की प्रवृति विद्यमान रहेगी तथा जरूरतमन्द लोगों तथा संस्थाओं को आप यथाशक्ति दान देते रहेंगे तथा समाज में ख्याति एवं आदर प्राप्त करेंगे। आप प्रायः सत्कार्यों को करने में ही रूचिशील तथा प्रयत्नशील रहेंगे एवं दुष्कर्मों की सर्वथा उपेक्षा करेंगे। आपके शुभ कार्यों को करने से अन्य सामाजिक लोग भी लाभान्वित होंगे तथा आपसे हमेशा प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। धनवान एवं वैभव शाली होने के कारण आपका समाज में पूर्ण प्रभुत्व स्थापित रहेगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को मन से स्वीकार करेंगे। आप समस्त परिवारिक सुखों से युक्त रहकर पुत्र एवं पत्नी के साथ सुखपूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक रहेगा।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरूषोऽभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरूप वाला तथा अभिमानी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीडित रहेंगे।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आप की शारीरिक लम्बाई अधिक होगी तथा ललाट भी विस्तृतता से युक्त रहेगा। आपकी आखें अत्याधिक सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। आपके कान तथा कंठ दीर्घाकृति से युक्त होंगे। संगीत के प्रति आपका विशेष रूझान रहेगा तथा इसका आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। शीत से आप अत्यन्त ही भयभीत रहेंगे एवं इसे सहने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। सत्यानुपालन में आप हमेशा तत्पर रहेंगे एवं इसके प्रति पूर्ण निष्ठा का प्रदर्शन भी करेंगे। साथ ही बाह्य रूप से दिखाने के लिए आप पूर्ण रूप से धर्माचरण करेंगे। आप अपने समाज में एक सम्मानीय पुरूष होंगे तथा दूर दूर के क्षेत्रों में आपकी प्रसिद्धि फैली रहेगी। आपका स्वभाव अल्प मात्रा में क्रोधी भी रहेगा तथा कामभावना की आप में अधिकता रहेंगी एवं कई बार इससे आप व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। समाज के सभी लोगों के प्रति आपके मन में प्रेम का भाव रहेगा तथा किसी से भी द्वेष या घृणा करना आपको उचित नहीं लगेगा। आपका अपनी आयु से अधिक आयु वाले व्यक्तियों से विशेष लगाव रहेगा तथा उनसे आप अधिकतर मित्रता के इच्छुक रहेंगे। लेखन कार्य में रूचिशील होने के कारण आपको काव्य शास्त्र में सफलता अर्जित हो सकेगी। आप में उत्साह का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा कभी कभी अपनी लोलुपता की प्रकृति से अपने लिए अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।

सारावली

आप हमेशा अपने पुत्र एवं पत्नी सहित परिवार के भरण पोषण में व्यस्त रहेंगे तथा दिखावे के लिए धर्मानुपालन की प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे। साथ ही आपकी कमर पतली रहेंगी। आप जल्दी ही अन्य लोगों की बातों से प्रभावित हो जाएंगे तथा उनके कथनानुसार ही आचरण करने के लिए भी शीघ्र उद्यत रहेंगे। आप में आलस का भाव भी रहेगा अतः स्वकार्य आपकी धीरे धीरे ही सम्पन्न होंगे लेकिन आप हमेशा एक सौभाग्यशाली पुरूष दौरान आपकी-अधिकाँश शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही भाग्यबल द्वारा सिद्ध हो जाएंगे। यात्रा एवं घूमने फिरने के आप विशेष शौकीन रहेंगे तथा आपका काफी समय यात्रा एवं भ्रमण में व्यतीत होगा। आपमें शारीरिक बल मध्यम रूप से विद्यमान रहेगा। अगम्य स्थानों अर्थात जहां आसानी से न पहुचां जा सके ऐसे स्थानों में जाने की आपकी प्रवृति रहेगी साथ ही कठिन तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए भी आप सर्वदा तत्पर रहेंगे। यदा कदा आप अपनी प्रवृति में कठोरता के भाव का भी समावेश करेंगे तथा जीवन में कई बार वात से उत्पन्न रोगों से पीड़ित एवं व्याकुल रहेंगे। इसके अतिरिक्त सद्गुणों से आप सर्वदा युक्त रहेंगे तथा जीवन में पूर्ण रूप से इसका अनुपालन करेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।

लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवार में आप मध्यम रूप से सम्मान प्राप्त करेंगे परन्तु कुल की परम्परा की वृद्धि करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका पालन करेंगे। स्त्री से आप प्रायः पराजित ही रहेंगे एवं अपने समस्त सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार या सलाह से सम्पन्न करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। आप का व्यक्तित्व अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा सुन्दर स्त्रियों के द्वारा आपको हमेशा प्रशंसा तथा सम्मान प्राप्त होगा। माता के प्रति आपका विशेष सम्मान का भाव रहेगा तथा उनका भी आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा। आप पुत्र संतति से भी युक्त रहेंगे। आपका स्वबन्धु वर्ग से विशेष स्नेह रहेगा तथा वे भी आपको पूर्ण हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा जीवन में धन का सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। त्याग की भावना कभी आपके अर्न्तमन में नित्य विद्यमान रहेंगी तथा अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का आप अन्य जनों के लिए प्रदर्शित करते रहेंगे। साथ ही आपके अधिकाँश भृत्यगण सुन्दर एवं गुणवान होंगे तथा आदरपूर्वक आपकी सेवा करेंगे। आपका परिवार के सदस्य संख्या अधिक रहेगी एवं सुख प्राप्ति के लिए आप सदैव चिन्तनशील तथा प्रयत्नशील रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आपको अपने जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन सम्पति को उपभोग करने का सुअवसर प्राप्त होगा तथा आप आनन्द पूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। आप अन्य व्यक्तियों के कल्याण के लिए नित्य चिन्तन करेंगे तथा यथाशक्ति उनकी सहायता तथा भलाई करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। साथ ही सलाह देने के कार्य में भी आप निपुण होंगे तथा लोग समय समय पर आपकी इस प्रवृति से लाभान्वित होते रहेंगे। विविध प्रकार के कार्यों को करने की आप में पूर्ण क्षमता विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग के आप पालनकर्ता होंगे एवं उन्हे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही आप वीरता के गुणों से भी सम्पन्न रहेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

संगीत शास्त्र के प्रति आप समर्पित रहेंगे तथा इस क्षेत्र में पूर्ण मान सम्मान तथा ख्याति अर्जित करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं कान्ति तथा लावण्यता का इसमें समावेश रहेगा। इसके साथ ही कामभावना की प्रवलता भी आप में रहेगी तथा इससे कभी

कभी आप व्याकुलता की अनुभूति करेंगे।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप की प्रवृति धार्मिक होगी एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर इनकी पूजा तथा सेवा भी करते रहेंगे। यदा कदा आप अपनी अभिमानी प्रवृति का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप दया एवं करूणा के भाव से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं दीन दुःखियों के प्रति अपनी इस भावना का समयानुसार पालन करते रहेंगे। आप शारीरिक बल से परिपूर्ण रहेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार की कलाओं के विषय में भी आपका अच्छा ज्ञान रहेगा। आप नाना प्रकार के शास्त्रों के विद्वान के रूप में ख्याति अर्जित कर सकेंगे। आपका सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा परिवार के अतिरिक्त अन्य लोगों के भी आप सुख प्रदाता होंगे।

समाज में आपको हादिक मान सम्मान प्राप्त होगा तथा समस्त प्रकार के वैभव ऐश्वर्य के आप स्वामी रहेंगे। आपके नेत्रों की आकृति विशाल रहेगी एवं निशाने बाजी की कला में आप चतुराई का प्रदर्शन करके इसमें विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगे। आपका वर्ण गौर वर्ण रहेगा एवं अपने नगर के आप प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय नागरिक होंगे तथा सभी लोग आपकी आज्ञा मानने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुल योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही परोपकारी प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबंधी कार्यों में अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे एवं अन्य जनों को यथा शक्ति अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। अपने इन कार्यों से आपकी समाज में पूर्ण ख्याति होगी एवं सभी लोग आपका हादिक सम्मान करेंगे। आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा अन्य धनवान लोग भी आपका आदर एवं सम्मान करेंगे। आप एक महान विद्वान तथा कई संस्थाओं में प्रमुख पद पर रहेंगे। माता पिता का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आप भी उनकी हादिक सेवा शुश्रूषा करते रहेंगे।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर एवं सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर एवं सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सावधानी रखें।

यदि आपके लिए समय ठीक न चल रहा हो मन में चिन्ता, शरीर में व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट नृसिंह भगवान की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए एवं शनिवार के उपवास रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाओं आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में कमी आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभफलों के प्रभाव में भी वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।